नेल नोडिंग्स के शैक्षिक विचारों की वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

14

डॉ. जितेंद्र कुमार

सारांश

विश्व के विशाल प्रांगण में मानव विविध अंतर निहित क्षमता सहित जन्म लेता है। उसकी इन शक्तियों का विकास शिक्षा द्वारा ही होता है। व्यक्तियों को उसकी संभावनाओं के उच्चतम शिखर तक पहुंचाना ही शिक्षा का उद्देश्य है। समय–समय पर अनेक दार्शनिकों एवं विद्वानों ने समाज में अपने–अपने ढंग से शिक्षा संबंधी विचारों को व्यक्त किया है। शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रसिद्ध अमेरिकी विचारक नेल नोडिंग्स अद्‌भुत विचार लेकर आई। प्रस्तुत कार्य यह परिकल्पित करता है कि नेल नोडिंग्स का शैक्षिक चिंतन भारतीय शिक्षा के विभिन्न अंगों में उनकी गहन तथा व्यापक निजी प्रयासों से उत्पन्न व्यावहारिक अनुभव पर आधारित है और भारतीय शिक्षा प्रणाली में सार्थक और व्यावहारिक सिद्ध हो सकता है। प्रस्तुत शोध में नेल नोडिंग्स के एक शिक्षाविद होने तथा उनके दार्शनिक और शैक्षिक चिंतन का कुछ प्रारंभिक एवं द्वितीयक स्रोतों द्वारा ऐतिहासिक एवं दार्शनिक विधि द्वारा विश्लेषण किया गया है। निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि नेल नोडिंग्स की दृष्टिकोण से शिक्षक नीतियों को शिक्षक छात्र के बीच सहयोगात्मक संबंधों के महत्व पर जोर देकर और सहानुभूति एवं समावेश के महत्व पर आधारित शिक्षण वातावरण का निर्माण करके देखभाल की नैतिकता को प्राथमिकता देना सर्वोत्तम है।

मुख्य शब्दः *नेल नोडिंग्स, देखभाल की नैतिकता, विश्लेषणात्मक अध्ययन*

प्रस्तावना

आधुनिक समाज आज एक संक्रमण के दौर से गुजर रहा है। परिवर्तन की इस तीव्र आंधी ने जहां जीवन के अनेक मूल्यों, आस्थाओं एवं प्रतीकों पर प्रहार किया है, वहीं एक पूरी की पूरी पीढ़ी को परंपरा एवं आधुनिकता, जड़ता और गतिमयता के द्वंद् में भटकने के लिए छोड़ दिया है। आज पुरानी मान्यताएं धीरे–धीरे समाप्त हो चुकी हैं और नई मान्यताएं सामने आ रही हैं। किसी भी युग में शिक्षा, शिक्षक और

डॉ. जितेंद्र कुमार
वरिष्ठ सहायक आचार्य, शिक्षक–शिक्षा विभाग, धर्म समाज कॉलेज, अलीगढ़
Email: jeet.jrf@gmail.com
Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB355-F26.Ch.14
Book: भारत में नवोन्मेषी शोधः राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, भारतीय ज्ञान प्रणाली और तकनीकी का संगम
Plagiarism Report: 15%

शिक्षा नीति का अध्ययन राष्ट्र की परिस्थितियों के संदर्भ में होता आया है। इसका कारण यह है की राष्ट्र के विकास को प्रभावित करने वाला सबसे प्रभावशाली माध्यम शिक्षा है। भारत विभिन्न भाषाओं धर्मों और समाज का देश है, यह विविधता एक व्यापक शैक्षिक वातावरण स्थापित करने में बाधाएं उत्पन्न कर सकती है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में आम तौर पर दोहराव द्वारा सीखने और रटने की प्रणाली पर अधिक जोर दिया जा रहा है। यह दृष्टिकोण अक्सर छात्रों के व्यक्तित्व और उनके सामाजिक विकास को नजरअंदाज कर देता है। नेल नोडिंग्स के शैक्षिक विचारों और भारतीय शिक्षा प्रणाली में उनके महत्व का विश्लेषण कई कारणों से महत्वपूर्ण है। नेल नोडिंग्स एक उल्लेखनीय अमेरिकी दार्शनिक एवं शिक्षाविद है जो तर्कवादी देखभाल और नैतिकता पर किए गए शिक्षा संबंधी कार्यों के लिए प्रसिद्ध हैं (अधिकारी और साहा, बी, 2021 य 2023)। नेल नोडिंग्स के शैक्षिक विचारों और भारतीय शिक्षा नीति, 2020 में वर्णित स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के अनुक्रम में उनके महत्व का अध्ययन वर्तमान विद्यालय शिक्षा से संबंधित समस्याओं का समाधान करने के लिए, एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने के लिए आवश्यक है।

संबंधित साहित्य की समीक्षा

संबंधित साहित्य की समीक्षा शोध प्रक्रिया का दूसरा सोपान है। इस प्रकार की समीक्षा शोधार्थी के लिए एक नए तथा उपयोगी शोध कार्य का मार्ग प्रशस्त करती है (शर्मा, आर, ए, 2011)। प्रस्तुत शोध पत्र को कार्य रूप में परिणत करते समय निम्नलिखित उपलब्ध शोध साहित्य का अध्ययन किया गया–

अधिकारी ए. और साहा बी. (2003) ने नेल नोडिंग्स का जीवन कार्य और दर्शन, शीर्षक से एक अध्ययन किया। शिक्षाविद् से नारीवादी बनी इस महिला का न केवल पश्चिम में बल्कि हाल के दिनों में एशियाई देशों में भी अध्ययन का एक प्रमुख क्षेत्र बन गया है। नोडिंग देखभाल की अमूर्त अवधारणा पर प्रकाश डालतीं हैं और एक नया आयाम प्रदान करती हैं। नोडिंग अपने दार्शनिक और शैक्षिक विकास का श्रेय अपने रिश्तेदारों को देती हैं। वह इसका श्रेय उन शुरुआती शिक्षकों को भी देती हैं जिनके साथ उन्होंने अपना कार्य क्षेत्र साझा किया था।

यादव एस. (2018) ने सहानुभूति और देखभाल पर नेल नोडिंग्स के दार्शनिक विचारों का विश्लेषण शीर्षक से एक अध्ययन किया। यह शोध पत्र स्कूल और उच्च शिक्षा दोनों स्तरों पर शिक्षाविदों के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करने का एक प्रयास है ताकि शैक्षिक विमर्शों में देखभाल और चिंतन के अपरिहार्य तत्वों को शामिल किया जा सके। यह विश्लेषण अमेरिकी दार्शनिक नेल नोडिंग्स के दार्शनिक विचारों पर आधारित है जिन्होंने छात्रों की शिक्षा के लिए सहानुभूति देखभाल और आलोचनात्मक सोच के महत्व पर विस्तार से लिखा है।

ओ ब्रायन, (2010) और सुमशन (2000) ने एक सुविचारित देखभाल पद्धति पर चर्चा की जो प्रतिस्पर्धी संस्थागत और व्यक्तिगत चुनौतियों को ध्यान में रखती है जो देखभाल नैतिकता को अधिकतम करना बहुत मुश्किल बना देती हैं।

सेमोला एवं अन्य (2010) ने परिवर्तनकारी नेतृत्व और नैतिक अभिविन्यासः न्याय की नैतिकता और देखभाल की नैतिकता के बीच अंतर शीर्षक से एक अध्ययन किया।

संपूर्ण समीक्षा में इस विषय पर बहुत कम शोध कार्य पाते हुए शोधकर्ता ने नेल नोडिंग्स के शैक्षिक विचारों की वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन विचार को चुना।

अध्ययन के उद्देश्य

उद्देश्यों का निर्धारण किसी भी शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण सोपान है। प्रस्तुत शोध पत्र में नेल नोडिंग्स के व्यक्तित्व और उनके शैक्षिक विचारों से आच्छादित निम्न उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं–

- नेल नोडिंग्स के जीवनवृत्त का अध्ययन करना।
- नेल नोडिंग्स के दार्शनिक विचारों की विवेचना करना।
- नेल नोडिंग्स के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- नेल नोडिंग्स की शैक्षिक विचारों की वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध की अवधारणा

शोध की अवधारणा प्रस्तुत शोध में अध्ययन कर्ता द्वारा निम्न अवधारणा दी गई हैं नेल नोडिंग्स के शैक्षिक विचार शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम शिक्षण विधियां छात्र– शिक्षक संबंध तथा शिक्षा के अनुशासन इत्यादि अंगों के संदर्भ में सार्थक रूप से निहित है।

शोध विधि

वर्तमान शोध में ऐतिहासिक दार्शनिक शोध विधि का प्रयोग किया गया है। इसमें दार्शनिक पद्धति के दिशा निर्देशों का पालन करते हुए नेल नोडिंग्स के विचारों और कार्यों को उनकी पुस्तकों, फिलासफी आफ एजुकेशन (नेल नोडिंग्स 2018) केयरिंग अ फेमिनिन अप्रोच एथिक्स ऑफ मोरल एजुकेशन (नेल नोडिंग्स 1984) को प्राथमिक स्रोत के रूप में लिया गया है।

नेल नोडिंग्स का जीवनवृत्त

नेल नोडिंग्स एक अमेरिकी दार्शनिक और नारीवादी है जिन्हें शिक्षा में देखभाल की नैतिकता के दर्शन में उनके योगदान के लिए विश्व स्तर पर सराहा जाता है। नॉडिंग्स का जन्म 19 जनवरी 1929 को इरविंगटन, न्यू जर्सी संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ था। उनकी मां नेल ए बाल्टर और पिता एडवर्ड रीथ थे। नोड्डिंग्स का पालन पोषण इर्विंगटन में एक श्रमिक वर्ग के परिवार में हुआ था। अमेरिका की न्यू जर्सी में मोंटक्लेयर स्टेट कॉलेज से गणित और भौतिक विज्ञान में स्नातक की डिग्री हासिल करने के बाद नोड्डिंग्स ने रटगर्स विश्वविद्यालय से गणित में मास्टर डिग्री भी प्राप्त की। उन्होंने स्टैनफोर्ड ग्रेजुएट स्कूल ऑफ एजूकेशन में शिक्षा में पीएचडी प्राप्त की। उन्होंने शिक्षा प्रणाली के विभिन्न क्षेत्रों और आयामों पर काम

किया। नेल नोडिंग्स का विवाह जेम्स नोडिंग्स से हुआ और उनके 10 बच्चे थे। उन्होंने गणित शिक्षक और स्कूल प्रशासक के रूप में सत्रह साल से अधिक समय समर्पित किया। उनके अगले उदयम ने उन्हें नैतिकता शिक्षा के सिद्धांत और शिक्षा के दर्शन में क्षेत्र में एक शिक्षाविद के रूप में प्रसिद्ध किया। नेल नोडिंग्स ने 1977 में स्टैनफोर्ड संकाय के सदस्य होने का गौरव प्राप्त किया। नेल नोडिंग्स को 1981, 1982 और 1997 में तीन बार उत्कृष्ट शिक्षक के लिए सम्मानित किया गया। 1984 में नॉर्डिंग्स ने केयरिंग ए रिलेशनल अप्रोच टू एथिक्स एंड मोरल एजुकेशन पुस्तक प्रकाशित की जो उनकी पहली एकल लेखन पुस्तक थी। 1984 में पॉल जे. शोर के साथ उन्होंने अवकेनिंग द इनर आईः इनट्यूशन इन एजुकेशन लिखी। 1989 में वूमेन एंड एविल प्रकाशित की। 1992 में द चेलेंज टू केयर इन स्कूल्स एन अल्टरनेटिव एप्रोच टू एजुकेशन प्रकाशित की। 1993 में एजुकेशन फॉर इंटेलिजेंस बिलीफ और अनबीलिफ और 1995 में फिलॉसफी ऑफ एजुकेशन लिखी।

वह स्कूल आफ एजुकेशन की एसोसिएट डीन बनीं। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय से अपनी सेवाएं छोड़ने के बाद वह कोलगेट विश्वविद्यालय और कोलंबिया विश्वविद्यालय में शामिल हो गईं। नोड्डिंग्स ने जॉन डीवी सोसाइटी और फिलॉसफी ऑफ एजूकेशन सोसाइटी के अध्यक्ष पद की अध्यक्षता की। नोडिंग्स ने 2002, 2003 के दौरान पूर्वी मिशिगन विश्वविद्यालय में जॉन डब्ल्यू पोर्टर चेयर को सुशोभित किया। नेल नोडिंग्स की मृत्यु 25 अगस्त 2022 में 93 वर्ष की आयु में फ्लोरिडा अमेरिका में हुई।

नेल नोडिंग्स के दार्शनिक विचार

नेल नोडिंग्स के दार्शनिक विचार मुख्य रूप से नैतिकता और मानवीय संबंधों पर आधारित हैं। नेल नोडिंग्स का दर्शन इस विचार पर केंद्रित है की अमूर्त नैतिक सिद्धांतों के स्थान पर देखभाल करने वाले संबंध नैतिक व्यवहार का आधार होने चाहिए। देखभाल की नैतिकता उनके दर्शन का आधारभूत बिंदु है। पारंपरिक पश्चिमी नैतिकता न्याय और अधिकारों जैसे अमूर्त सिद्धांतों पर आधारित होती है। नेल नोडिंग्स उससे अलग हटकर देखभाल को नैतिक विचार का मूल आधार मानती हैं। नेल नोडिंग्स का तर्क है कि नैतिक निर्णय अमूर्त सिद्धांतों से नहीं बल्कि विशिष्ट मानवीय संबंधों और उनके संदर्भ से उत्पन्न होते हैं। देखभाल हमेशा एक संबंध में घटित होती है। एक देखभाल करने वाला और एक देखभाल प्राप्त करने वाला। नोडिंग्स का मानना है कि नैतिक निर्णय मानवीय संबंधों के संदर्भ में उत्पन्न होते हैं। नोडिंग्स इन संबंधों में सहानुभूति, समझ, जवाबदेही के महत्व पर जोर देती हैं। उनका मानना है की सहानुभूति, करुणा, संवेदनशीलता जैसे भावनात्मक घटक नैतिक निर्णय लेने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। देखभाल की नैतिकता में हम अन्य लोगों की जरूरत और भावनाओं के प्रति संवेदनशील होते हैं और उसी के अनुरूप प्रतिक्रिया भी देते हैं। देखभाल को मात्र एक तरफ के संबंध के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए बल्कि यह एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है जहां देखभाल करने वाला और देखभाल प्राप्त करने वाला दोनों ही एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। नोडिंग्स

प्राकृतिक देखभाल और नैतिक देखभाल के बीच अंतर को व्यक्त करती हैं। प्राकृतिक देखभाल वह स्वाभाविक भाव है जो हमें अपने प्रियजनों के प्रति होता है। जब प्राकृतिक देखभाल संभव नहीं होती या अपर्याप्त होती है तब हम नैतिक देखभाल की ओर अग्रसर होते हैं जिसमें हम विवेकपूर्ण प्रयास पूर्वक दूसरों की भलाई के लिए कार्य करते हैं। नोडिंग्स के दार्शनिक विचार हमें नैतिक शिक्षा और मानवीय संबंधों को नए अभिवृत्ति से देखने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका आधार अमूर्त सिद्धांतों के बजाय वास्तविक जीवन के संबंधों और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं से उपजता हैं। वह हमें स्मरण कराती है की देखभाल न केवल एक नैतिक गुण है बल्कि मानव अस्तित्व और सीखने के लिए केंद्रीय पहलू भी है।

नेल नोडिंग्स के शैक्षिक विचार

नेल नोडिंग्स एक उत्कृष्ट शैक्षिक दार्शनिक है जिनके विचारों, विशेषकर देखभाल की नैतिकता ने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। नेल नोडिंग्स का मानना है कि शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का पोषण होना चाहिए जो नैतिक रूप से जिम्मेदार हो और दूसरों के प्रति सहानुभूति रखते हों। उनके कार्यों ने पारंपरिक शैक्षिक प्रतिमानों को चुनौती दी है जो अक्सर ज्ञान संचरण और मानकीकृत परीक्षण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। नेल नोडिंग्स के अनुसार शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास से परे जाकर छात्रों के भावनात्मक और नैतिक विकास को भी विकसित करना चाहिए जिससे वह एक देखभाल करने वाले वातावरण तथा समाज से जुड़ सकें। नोडिंग्स के विचारों ने पाठ्यक्रम निर्माण शिक्षण विधियां और छात्र शिक्षक संबंधों पर प्रभाव डाला है जिससे शिक्षकों को छात्रों के साथ गहन तथा देखभाल करने वाले संबंध बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इसके परिणामस्वरुप नेल नोडिंग्स के शैक्षिक दर्शन ने एक अधिक मानवीय और समग्र शिक्षा प्रणाली का समर्थन किया है जो छात्रों को केवल सूचना ग्रहण कराने के स्थान पर पूर्ण व्यक्तित्व के रूप में देखती है।

नेल नोडिंग्स की शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

शिक्षा की अवधारणा

नेल नोडिंग्स के अनुसार शिक्षित होने का अर्थ मनुष्य बनना है और पूर्ण मनुष्य तभी बन जा सकता है जब शिक्षा के द्वारा मनुष्य का नैतिक तथा देखभाल युक्त विकास किया जाए। अतः शिक्षा सामाजिक रूपांतरण के लिए किया जाने वाला देखभाल युक्त, नैतिक और सांस्कृतिक कर्म है।

शिक्षा के उद्देश्य

नेल नोडिंग्स के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य नैतिक सांस्कृतिक और उत्तरदायित्व से पूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करना है। वर्तमान में नई शिक्षा नीति (2020) और वर्तमान भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में यह उद्देश्य किसी भी राष्ट्र को समृद्धि और विकास के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

पाठ्यक्रम

नेल नोडिंग्स का मानना है कि पाठ्यक्रम में इस प्रकार के विषयों का समावेश किया जाना चाहिए जिससे मानव और मानव समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति हो। ऐसा पाठ्यक्रम ही उसके लिए उपयोगी और विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। यह विचार उनके जॉन डीवी के दर्शन प्रयोजनवाद और करके सीखने, सक्रिय रहकर सीखने के सिद्धांत के करीब होने को दर्शाता है। अतः उनका मानना है पाठ्यक्रम में छात्रों की वास्तविकताएं और उनका परिवेश तथा सांस्कृतिक विशेषताएं निहित होनी चाहिए जिससे वह सार्थक सीखने के अनुभव से पल्लवित हो सके।

शिक्षण विधि

नेल नोडिंग्स की दृष्टि में वह शिक्षण विधि श्रेष्ठ है जिसमें छात्र व शिक्षक दोनों की ही सक्रिय भूमिका हो तथा इस प्रकार वे संयुक्त प्रयासों द्वारा यथार्थ का बोध करें। शिक्षण विधि के संबंध में उनके सुझाव संक्षेप में निम्न प्रकार हैं–

- नेल नोडिंग्स की दृष्टि में जनतांत्रिक विधियां ही श्रेष्ठ हैं। एकतांत्रिक विधि उचित नहीं हैं।
- नेल नोडिंग्स का मानना है कि शिक्षक अपने विचारों को छात्रों पर आरोपित ना करे तथा अंतः संप्रेषण व सहभागिता को प्रेरित करें।
- शिक्षण विधि ऐसी हो जिसके द्वारा शिक्षार्थी में आलोचनात्मक चिंतन तथा समस्या समाधान की प्रक्रिया में दक्षता का विकास हो सके।
- प्रश्नोत्तर, मुक्त संप्रेषण, वार्तालाप तथा विचार विनिमय करते हुए आलोचनात्मक चिंतन को प्रेरित करने वाली विधियां उत्तम है
- स्वाध्याय को भी नोड्डिंग्स ने सृजन की प्रक्रिया के लिए आवश्यक माना है। उनका मानना है कि पढ़ने या लिखना यांत्रिक क्रिया नहीं है। नई शिक्षा नीति 2020 में निहित व्यवसायिक पाठ्यक्रमों और सह पाठयक्रम गतिविधियों के संदर्भ में अभ्यास और स्व अनुभव के महत्व को वह स्वीकार करती हैं।

शिक्षक

शैक्षिक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग शिक्षक है। यदि शिक्षा को देखभाल की नैतिकता युक्त कार्यवाही माना जाए तो यह कार्यवाही शिक्षक के क्रांतिकारी नेतृत्व में ही संपन्न होती है। नेल नोडिंग्स के अनुसार शिक्षक सामाजिक परिवर्तन का अभिकर्ता है।

शिक्षार्थी

नेल नोडिंग्स शिक्षा प्रक्रिया में शिक्षार्थी को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती हैं। उनका मानना है छात्र कोई डिपॉजिटरी नहीं है जिसमें शिक्षक ज्ञान राशि जमा कराता है। वह जानने की क्रिया में स्वयं संलग्न हो तभी वह सच्चा ज्ञान प्राप्त कर सकेगा। छात्र के व्यक्तित्व की संभावनाओं को नकारते हुए उसे वस्तु बना देना तथा उस पर यंत्रवत काम करना अत्यंत अनुचित है। यहां वह रूसो और अरस्तु की

प्रकृति वादी सिद्धांतों तथा आधुनिक जनतांत्रिक भारतीय परिस्थितियों के निकट दिखाई देती हैं। नेल नोडिंग्स का मानना है शिक्षकों को सर्वप्रथम विद्यार्थियों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ना चाहिए। एक देखभाल करने वाला और सहायक शिक्षक–छात्र संबंध सीखने की प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण है।

विद्यालय

नेल नोडिंग्स का मानना है कि विद्यालय तथा शैक्षिक संस्थानों के अतिरिक्त उनके बाहर की शिक्षा भी अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकती है। नेल नोडिंग्स विद्यालय में प्रचलित शिक्षा को वर्णनात्मक मानती हैं। विद्यालय के अंदर या बाहर किसी भी स्तर के शिक्षक और छात्र संबंध को वह अत्यंत आवश्यक मानती हैं।

अनुशासन

नेल नोडिंग्स ना तो दमनात्मक अनुशासन का समर्थन करती हैं न ही पूर्ण मुक्तयात्मक अनुशासन को ही उचित मानती हैं। उनके अनुसार शिक्षक के प्रभुत्व तथा छात्रों की स्वतंत्रता के मध्य उचित संतुलन होना चाहिए। इसी प्रकार छात्रों में अपने अधिकार एवं स्वतंत्रता के सम्यक उपयोग का बोध भी विकसित किया जाना आवश्यक है। प्राचीन भारतीय दार्शनिक मान्यताओं में समीप वह आत्म अनुशासन और आत्म विवेक को ही श्रेष्ठ अनुशासन मानती हैं।

निष्कर्ष एवं निहितार्थ

नेल नोडिंग्स उन पारंपरिक शैक्षिक मॉडलों को चुनौती देती हैं जो शिक्षकों और छात्रों के बीच देखभाल संबंधों के विकास की तुलना में विषयवस्तु वितरण को प्राथमिकता देते हैं। नेल नोडिंग्स का दर्शन शिक्षा को केवल ज्ञान के संचरण के रूप में देखने के स्थान पर इसे छात्रों के समग्र विकास के पोषण और समर्थन की एक प्रक्रिया के रूप में देखने को प्रोत्साहित करता है। भारतीय राजनीतिक, सामाजिक और शैक्षिक परिस्थितियों के संदर्भ में नोडिंग्स का तर्क समरूपता प्रकट करता है कि शिक्षा को केवल शैक्षणिक उपलब्धि से आगे बढ़ाकर ऐसे देखभाल करने वाले व्यक्तियों के विकास पर केंद्रित होना चाहिए जो समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें। नोडिंग्स का दर्शन इस विचार का भी समर्थन कर करता है की शिक्षा सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक होनी चाहिए जो भारतीय समाज के मूल्यों और परंपराओं को प्रतिबिंबित करें। भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली में निहित शैक्षिक चुनौतियों के समाधान के लिए उनके कई कार्य और सुझाव सार्थक सिद्ध हो सकते हैं। विद्यार्थी चाहे किसी भी पृष्ठभूमि से हो उन्हें गुणवत्तापूर्ण और समान शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है। शिक्षकों को छात्रों से प्रभावी रूप से जोड़ने के लिए और उनका भावनात्मक समर्थन करने के लिए उन्हें आवश्यक कौशलों से युक्त करने हेतु शिक्षण प्रशिक्षण में निवेश करना अत्यंत महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। संवेदनात्मक और नवीन एवं सक्रिय शिक्षण विधियों द्वारा विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के साथ–साथ शैक्षिक उत्कृष्टता और विद्यार्थियों के समग्र विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है।

अतः नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के प्रकाश में वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिस्थितियों में केवल शैक्षिक कौशलों का उन्नयन न होकर देखभाल नैतिकता को समाहित कर प्रत्येक बालक को मूल्यांकन और समर्थन की अनुभूति कराकर नैतिक और भावनात्मक व्यक्तित्व का विकास सहज हो सकता है, जो की राष्ट्रीय उत्थान की दिशा को प्रशस्त करता है।

संदर्भः

1. साहा बी. और अधिकारी ए. (2003) मांटेसरी पद्धतिः एक रचनावादी दृष्टिकोण अंतर्राष्ट्रीय जनरल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च एंड इंजीनियरिंग डेवलपमेंट. 6(3), 768.772
2. कर्लिंगर, एफ. एन. (2021). फाऊंडेशंस ऑफ बिहेवियरल रिसर्च. सुरजीत पब्लिकेशंस, दिल्ली।
3. नेल नोडिंग्स (2018) फिलासफी ऑफ एजूकेशन,(चौथा संस्करण), न्यूयॉर्कः रूटलेज शर्मा, आर. ए. (2011). शिक्षा अनुसंधान, मेरठः आर.लाल बुक डिपो
4. नोडिंग्स, एन० (2002) स्टार्टिंग एट होमः केयरिंग एंड सोशल पॉलिसी, बकैले, सी०ए० यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस
5. नोडिंग्स एन. (2005) स्कूलों में देखभाल की चुनौतीः शिक्षा के प्रति एक वैकल्पिक दृष्टिकोण. (द्वितीय संस्करण) न्यूयॉर्क एनवाईः टीचर्स कॉलेज प्रेस.
6. नोडिंग्स नेल (1984), केयरिंग अ फेमिनिन अप्रोच एथिक्स ऑफ मोरल एजुकेशन, बकैले यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस
7. बेस्ट, जे. डब्ल्यू. एवं काहन, जे. वी. (1995). रिसर्च इन एजुकेशन. प्रेन्टिस हॉल ऑफ इंडिया, नई दिल्ली।